अभिज्ञान शाकुन्तलम् - प्रथम अंक (कथानक)

'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' नाटक का प्रारंभ ग्रीष्म ऋतु के आरंभ में नटी के गायन से शुरु होता है, जिससे आकृष्ट होकर सूत्रधार कहता है दुष्यन्त हरिन से खींचे हुए आश्रम तक पहुँच जाते हैं, वह तीर-कमान साधे हुए हैं तभी वैखानस आकर राजा को रोकता है कि आश्रम-मृग अवध्य है। वैखानस से ही राजा दुष्यन्त को यह ज्ञात होता है कि यह काश्यप कण्व का आश्रम है, जो इस आश्रम में अभी उपस्थित नहीं हैं। वे अपनी पुत्री शकुन्तला के भाग्य-दोष निवारण के लिए सोमतीर्थ गए हैं। इस समय आतिथ्य-भार शकुन्तला पर है और उन्हें उसका आतिथ्य ग्रहण करना चाहिए।

कण्व के दर्शन की इच्छा से राजा आश्रम में प्रवेश करते हैं, वहाँ उनकी पुत्री शकुन्तला अपनी दो सखियों प्रियंवदा और अनुसूया से बातचीत में संलग्न है। राजा उनकी वार्त्ता छिपकर सुनते हैं, अवसर मिलते ही उनके समक्ष उपस्थित हो जाते हैं। वार्त्ता के क्रम में यह ज्ञात होता है कि शकुन्तला कण्व की पोषित पुत्री है। वह अप्सरा मेनका और राजर्षि विश्वामित्र की संतान है। शकुन्तला के सौन्दर्य से आकृष्ट हुआ राजा सोचता है यह तो मेरे वरणयोग्या है -

'प्रमाणमन्तःकरण प्रवृत्तयः'

शकुन्तला के इस तपोवनी स्वरूप को देखकर राजा की सहानुभूति भी है उसके साथ, वह अप्रत्यक्ष रूप से इसे व्यक्त भी करता है।

Scanned with CamScanner

शकुन्तला और सखियों से वार्त्ता में जो सहजता आती है, तो राजा को अपने प्रति शकुन्तला का आकर्षण भी ज्ञात होता है। सखियों के बीच हास-परिहास भी होता है।

इसी बीच एक जंगली हाथी के उत्पात से तीनों सखियाँ आश्रम में चली जाती हैं और राजा भी आश्रम की रक्षा के लिए बढ़ते हैं। शकुन्तला के प्रति आकर्षण के कारण राजा राजधानी जाना स्थगित कर देते हैं।

'शाकुन्तलम्' की रमणीयता से आकृष्ट होकर विदेशी विद्वान इसकी प्रशंसा करते थकते नहीं। जर्मन कवि 'गेटे' का कथन है – 'यदि तीनों लोकों का ऐश्वर्य एक स्थान पर प्राप्त करने की इच्छा हो, तो इस नाटक का अध्ययन मनन करना चाहिए।'

Uma Pathak
B.A. II (Hons. Content)
SKt. Deptt.

Scanned with CamScanner